सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल। (LEFI,Madras)

मार्च-अप्रैल,2002

धन्यवाद-ज्ञापन

सच्चा आभार व्यक्त करने का अर्थ यह है कि हम परमेश्वर द्वारा हमारे ऊपर रखी आशीष को मान कर उसका आभार मानें और यह पूछें कि हमने उसके लिए क्या किया है। यह तो गंभीर करने वाली बात है, यह याद करते हुए कि कैसे एक मंदिर के अंदर प्रवेश करने वाले व्यक्ति के बारे में यीशु ने कहा, उसकी प्रशंसा करने के लिए नहीं बल्कि जाँच करने के लिए। उस फरीसी ने ऐसे शब्दों के साथ प्रार्थना आरंभ की, जो आज असंख्य लोगों के होठों पर है..... धन्यवाद-ज्ञापन के समय, 'हे परमेश्वर में तेरा धन्यवाद करता हूँ।' फिर भी मंदिर से लौटते हुए परमेश्वर ने उसका अधिग्रहण नहीं किया। क्या हम इस बात के अपराधी नहीं कि परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए, हम अभिमान के साथ कहते हैं कि हम दूसरों के समान नहीं हैं। अपनी ही बढ़ाई करने से सावधान रहे। आओ यह भूल जाएँ कि हमने परमेश्वर के लिए क्या किया है और यह याद करें कि उसने मसीह द्वारा हमारे लिए क्या किया है और लगातार हर दिन वह हमारे लिए कितना कुछ कर रहा है।

- चुना गया।

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
lefipost@mailandnews.com

At our Web Site:
http://lefi.org

प्रेम में आवास

उत्पत्ति(३३:१-४) 'जब याकूब ने अपनी आंखें उठाकर देखा कि एसाव चार सौ पुरूष साथ लिए चला आ रहा है, तब उसने लिआ और राहेल तथा दोनों दासियों के बीच बच्चों को बांट दिया। तब उसने दासियों और उनके बच्चों को तो सबसे आगे, फिर लिआ और उसके बच्चों को, और सबसे पीछे राहेल और यूसुफ को रखा। परन्तु वह स्वंय उनसे आगे निकल गया और जब तक अपने भाई के निकट न पहुंचा, उसने सात बार भूमि पर गिर कर उसे दण्डवत् किया। तब एसाव इस से भेंट करने दौड़ पड़ा और उसे छाती से लगाया और गले से लिपटकर उसे चूमा और वे रो पड़े ... '

बीस साल बीतने पर इन दोनों भाइयों ने भेंट की। एसाव ने पहले ही बदला लेने की शपथ खा रखी थी कि वह अपने पिता की मृत्यु होते ही बदला लेगा। हाँलाकि उनका पिता(इसहाक) अभी जीवित ही था लेकिन इन भाइयों ने आभास किया कि मिलाप की घड़ी आ पहुँची है। बीस साल की कड़वाहट अब अपने को व्यक्त करेगी। यदि तुम अपने हृदय में किसी भी कारण, किसी दूसरे से एक दिन के लिए भी कड़वाहट रखोगे, तो तुम्हारी आत्मिक व्यवस्था विषैली हो जाएगी। तुम्हें चाहे इसका कारण कितना ही उचित क्यों न दिखाई पड़े। लेकिन पवित्र बाइबल कहता है,'सूर्य छिपने तक क्रोधी न बने रहो।' यह परमेश्वर का नियम है। हम परमेश्वर के नियम का पालन क्यों नहीं कर पाते? हमारे मन में परमेश्वर का भय क्यों नहीं है? ' घमंड के कारण। 'मुझे क्षमा कीजिए?' अपने भाई या बहिन से यह कहना हमें क्यों कठिन लगता है '

हम इतने सिद्ध कब से बन गए कि हम यह समझने लगे कि हमारे भीतर कोई कमी नहीं है?

यह हृदय घमंडी है, जो परमेश्वर की उपस्थिति को त्यागने को तैयार है। क्या यह भयंकर बात नहीं? कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर की उपस्थिति नहीं त्यागना चाहूँगा, चाहे मुझे अपना जीवन ही दाँव पर क्यों न लगाना पड़े।' जब तुम आत्मिक रूप से असंवेदनशील हो जाते हो, अनेक विचार तुम्हारे दिमाग़ में घर करने लगते हैं। एक असंवेदनशील आत्मिक व्यक्ति में, कचरा इक्ठ्ठा होना आरंभ हो जाता है। दुष्ट विचार, नाराज़गी, विद्वेष, ऐसी अभिलाषा जो परमेश्वर की योजना के बाहर हो ' ऐसी सारी बातें इक्ठ्ठी होने लगती हैं।

हमने झूठ न कहना सीख लिया है। हमने चोरी करना छोड़ दिया है। हमने गाली देना त्याग दिया है। परमेश्वर को दशमांश और भेंट देना सीख लिया है। हमने प्रार्थना करना सीख लिया है और परमेश्वर को अपने दिन का समय देना सीख लिया है। लेकिन महत्वपूर्ण विषयों में हम विफल हो रहे हैं। शैतान की यह चाल है कि हमारे एक दूसरे के संबंध में किस प्रकार बाधा डाले।

साधारणतय, सारे संसार में हम सास-ससुरों(दूल्हे और दुलहिन के मात-पिता) के बीच तनाव देखते हैं। आत्मिक व्यक्ति कौन है? ऐसा व्यक्ति, जिसका अपने सास-ससुर से अच्छा संबंध है, वह विजयी आत्मिक व्यक्ति है। उत्तेजना का

प्रेम में आवास...पृष्ठ २

अवश्यंभावी उत्तराधिकार

दुर्भाग्यवश, बहुत ही गिने चुने लोगों को अपने पूर्वजों के बारे में और उनके पापों के विषय में ज्ञान है। फिर भी, पूर्वजों के पापों का असर उनके जीवन पर पड़ता है, चाहे वह इसे जाने या न जानें। मसीह लोगों ने इस सत्य को खो दिया है। पूर्वजों के पाप का पश्चात्ताप करने में विफल होने के कारण, अधिकतर परिवारों पर बने शाप से छुटकारे की कोशिश असफल होती है।

मेरी एक मित्र है, जिसके साथ कुछ समय से मेरा पत्र व्यवहार है। वह एक निष्ठावान मसीह है, जो प्रभु की सेवा पूरे मन के साथ करती है। कुछ महीनों पहले सेंडी(मेरी मित्र का नाम) से मुझे एक पत्र मिला, जिसमें उसने लिखा कि उसे नहीं पता उसके शरीर में क्या कमी है और वह गंभीर रूप से बीमार थी। पत्र पढ़ते हुए मेरा मन दुखी हो उठा, क्योंकि जो लक्षण उसने लिखे थे, उनसे यह स्पष्ट होता था कि उसे पाचक ग्रंथि का कैंसर है।

मैंने उसी समय फ़ोन पर उससे बात की। उसने मुझे बताया कि वह डॉक्टर के पास से आ रही है और उसे पेट के पास का केट-स्कैन का नतीजा मिला था। डॉक्टर ने उसे बताया कि उसके स्कैन ने दिखाया कि उसकी पाचक ग्रंथि में एक बड़ा फोड़ा है और ऐसा दिखता है कि वह संघातिक है। अगले ही दिन उसे हस्पताल में जाँच के लिए दाख़िल होना था. उसकी शल्य चिकित्सा की जानी थी। इसके द्वारा वे इस फोड़े की जाँच करके यह पता लगाएँ कि कैंसर है या नहीं। लोग जिन्हें पाचक ग्रंथि का कैंसर हो ऐसे चरण में पहुँचने पर, बीमारी का पता लगने के तीन से छह महीने तक ही जीवित रहते हैं। इस बीमारी का
कोई ठोस इलाज भी नहीं है।

मैंने सेंडी(अपनी सहेली) से पूछा कि क्या उसे परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान है कि वह जीवित रहेगी या उसके जीवन का अंत आ गया है। उसने जवाब दिया,'मैं प्रभु से यही प्रश्न कर रही हूँ। लेकिन सच यह है कि मैं इतने दर्द में हूँ कि मेरा संवेग उथल-पुथल है, ख़ासकर मेरे पति की गहरी चिंताओं और दुःख को देख कर।इस कारण मैं प्रभु का उत्तर भी स्पष्ट नहीं सुन पा रही हूँ। फिर भी, भीतर गहराई में, मुझे ऐसा आभास होता है कि मेरा, प्रभु के प्रति जीवन-कार्य पूरा नहीं हुआ है।'

मेरा जवाब था,'सेंडी, प्रभु तेरे हृदय की इच्छा जानता है। वह जानता है कि तू उसकी इच्छा पूरी करना चाहती है। तू उसमें आसरा ले सकती है। यदि तुझे परमेश्वर से स्पष्ट उत्तर नहीं मिल रहा कि यह उसकी इच्छा नहीं कि तुझे अपने घर(स्वर्ग) में अभी बुलाए, तो मैं विश्वास करती हूँ कि तुम्हें पूरी सामर्थ के द्वारा मृत्यु का विरोध करना चाहिए।'

सेंडी ने उत्तर दिया,'तुम जानती हो, रबेका(मेरा नाम), कई सालों से मैं यह जानती हूँ कि हमारे परिवार पर कैंसर का शाप है। जहाँ तक पुरानी पीढ़ियों में मैं खोज सकती हूँ, मैंने देखा ही कि हरेक परिजन कैंसर के रोग द्वारा लगभग जवानी के दिनों में ही मारा जाता है। अधिकतर, यह कैंसर जिगर या पाचक ग्रंथि का ही रहा है।मैंने सोचा था कि मैंने अपने ऊपर से इस पारिवारिक शाप को तोड़ दिया है, लेकिन अब ऐसा लगता है कि मैं ऐसा कर पाने में विफल रही हूँ। मुझे समझ नहीं आता कि ऐसा क्यों है। मुझे मसीह की शक्ति द्वारा इसे तोड़ने की सामर्थ प्राप्त करनी चाहिए।'

मैंने सेंडी से पूछा कि क्या तुम्हें इस शाप के जन्म का कारण मालूम है। उसने जवाब दिया,'नहीं, मैं नहीं जानती। मैंने अपनी जी तोड़ कोशिश की लेकिन कभी पता नहीं लगा पाई। मुझे केवल यही पता है कि परमेश्वर ने मुझे इस बात का ज्ञान

चाहे कोई भी करण क्यों न हो, आत्मिक व्यक्ति इन सबके ऊपर विजयी रहता है। क्या हम एक दूसरे के साथ पूर्ण सद्भावना में रह रहे हैं?

जीवन सरल परिस्थितियों से ही नहीं भरा है। साधारणतय हमें याकूब जैसे चतुर व्यक्तियों का सामना करना पड़ता हैं, जो हमें उकसाते हैं। वह हमें चकमा देने में कामयाब होता है। ऐसे व्यक्ति की ओर तुम्हारा क्या व्यवहार होना चाहिए?'एसाव' एक त्रुटिपूर्ण व्यक्ति था, और ऐसा अनाज्ञाकारी कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया था। लेकिन इस परिस्थिति में, यह बड़े आश्चर्य की बात है वह कैसा सही व्यवहार करता है। उसने अपने भाई को चूमा और उससे ऐसा व्यवहार किया जैसा भटके हुए नौजवान से उसके पिता ने किया था(मत्ती का सुसमाचार)।

'किसी ने भी परमेश्वर को नहीं देखा है। यदि हम एक दूसरे से प्रेम करें, तो परमेश्वर हमारे बीच वास करता है, और उसका प्रेम हममें सिद्ध होता है।(१ युहन्ना ४:१२)' मैं चाहता हूँ कि हमारे अराधना के स्थानों में जब लोग आँए तो प्रेम का वातावरण अनुभव करें। 'परमेश्वर हमारे अन्दर वास करता है।' हम यह कैसे जानें? एक दूसरे के प्रति सकारात्मक प्रेम के द्वारा। ऐसे प्रेम में डाँट खाने पर भी दरार नहीं पड़ती। और यह लगातार बहता रहता है। क्या तुम एक नदी के बहाव को रोक सकते हो? नदी के बहाव को नियंत्रित करने के लिए कैसे बड़े-बड़े बाँध बनाने पड़ते हैं। कई बार वह भी बह जाते हैं। परमेश्वर के प्रेम की नदी के बहाव को हममें से किसी को भी नहीं रोकना चाहिए। यह बहुत बड़ी गलती होगी। लेकिन हम ऐसा कर सकते है। और शैतान केवल यही चाहता है। ज़रा सोचिए, यदि किसी नहर या नाले से पानी बहना बंद हो जाए तो क्या होगा? वह सारा क्षेत्र दुःख भोगेगा। वे कोई फ़सल नहीं पा सकते, क्या तुम प्रेम के बहाव को रोके हुए हो? अपने हृदय की जाँच करो। परमेश्वर ने हमें बड़ा सामान्य सा मापदण्ड दिया है 'यदि तुम वेदी पर अपनी भेंट लेकर आते हो और वहाँ पर तुम्हें याद आता है कि तुम्हारे भाई की ओर तुमने अपराध किया है, पहले जाकर अपने भाई से सुलह करो और फिर आकर अपनी भेंट चढ़ाओ।' (मत्ती ५: २३,२४) मैंने कई भाइयों से माफ़ी माँगी, केवल एक बार नहीं, या दो बार नहीं बल्कि चार बार।

प्रेम में आवास...पृष्ठ ३

करवाया कि यह शाप है और इसका असर मेरे समस्त परिवार पर है।'

पवित्र आत्मा मुझे और मेरे पति को 'पूर्वजों के पापों का पश्चात्ताप करने के नियम' का पाठ सीखा रहा था। मैंने यह जानकारी सेंडी को दी, ख़ास कर लैव्यवयवस्था का २६वाँ अध्याय। मैंने सोचा कि यदि यह कैंसर का शाप उत्तराधिकार में मिला है तो पूर्वजों के पापों के कारण शैतान को नियमानुसार इस परिवार पर शाप लाने का अधिकार प्राप्त है।

'लेकिन यदि तुम्हें उनके सारे पापों का ज्ञान नहीं हो तो? ' उसने पूछा।'मुझे इस बात की जानकारी है कि मेरे पूर्वजों का इतिहास परस्त्रीगमन और तालाक का है। सच तो यह है कि मैं ही हूँ जो विवाहित रही और यह भी इस कारण कि मैंने मसीह को अपनाया है। मेरे परिवार में बहुत ही गिने चुनों ने मसीह को अपनाया था।

मैंने सेंडी को सलाह दी, कि उसे प्रभु के सामने घुटने टेक कर अपने पूर्वजों के पापों की क्षमा माँगनी चाहिए, जिन पापों की उसे जानकारी नहीं है, उस के लिए, प्रभु से यह विनती करने आवश्यकता है कि वह उसे यीशु के पवित्र लहू द्वारा पूर्वजों के पापों के असर से अलग कर दे। इसके बाद उसे यह विनती करनी चाहिए कि यदि यह शाप प्रभु का दिया है तो वह उसे हटा दे। इसके बाद ही वह शैतान का सामना करने के लिए तैयार होगी। अपने पूर्वजों के पापों का अंगीकार करने के पश्चात शैतान को नियमानुसार उसके ऊपर और उसकी आने वाली पीढ़ियों पर कैंसर का शाप लाने का अधिकार नहीं रहेगा। उसे यीशु मसीह के नाम में इस कैंसर के शाप को, अपने जीवन से दूर होने का आदेश देना चाहिए।

मैंने उसे एक और सलाह दी कि वह और उसका पति, मिल कर उसका तेल से अभिषेक करें, उसके उदर के सारे भाग पर और जहाँ कहीं भी दर्द है, तेल का अभिषेक करें। जब वे तेल से अभिषेक कर रहे हों तो साथ ही प्रभु यीशु के नाम में उन सारे शैतानों को छोड़कर, जो इस शाप से संबंधित हैं, जाने का आदेश दे। मैंने उसे यह सलाह दी कि वह ख़ासकर उस शैतानी आत्मा को आदेश दे, जो उसकी पाचक ग्रंथी पर असर या फोड़े को पीड़ित कर रही है, कि उसी समय यीशु के नाम में छोड़कर चली जाए। अंत में उसे प्रभु से यह माँगना चाहिए कि जो कोई हानि उसे हुई है, वह उसे स्वस्थ कर दे।

सेंडी ने उस रात यह सब किया। जब शल्य चिकित्सा के लिए उसे अगले दिन ले ज़ाया जा रहा था, डॉक्टर लोग उस फोड़े का, जो उन्हें केट स्कैन मैं दिखा था, कण मात्र भी नहीं ढूँढ़ पाए। उन्होंने केवल कुछ सूजन के कारण पाचक ग्रंथि तो बढ़ा हुआ देखा, इसके अलावा ओर कोई समस्या नहीं थी। प्रभु की स्तुति हो।

कितने ही मसीह लोगों को चंगाई नहीं प्राप्त हुई क्योंकि उन्होंने अपने पूर्वजों के पाप का पश्चात्ताप नहीं किया था।

-चुना गया।

प्रेम में आवास...पृष्ठ २

मुझे यह पूरा विश्वास था कि गलती मेरी नहीं थी। लेकिन बोले गए शब्दों ने किसी तरह उन्हें ठोस पहुँचाई। तो इसलिए मैंने कहा,'मुझे माफ़ कीजिए।' और मैं ज़रूरत पड़ने पर दुबारा माफ़ी मांगूगा। मैं नहीं चाहता कि इस प्रेम की नदी का बहाव मेरे मन से रुक जाए। मैं परमेश्वर की उपस्थिति नहीं खोना चाहता। मेरे प्रिय जनों अत्यधिक सचेत रहो।

यदि तुम परमेश्वर की उपस्थिति में रहना चाहते हो तो उसके प्रेम में बने रहो। यदि तुम प्रेमभाव में नहीं हो तो तुम परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं हो। तुम तो केवल एक संस्था से जुड़े हो, और परमेश्वर की सन्निधि में नहीं हो। यह कैसी ख़तरनाक स्थिति है। जब तुम परमेश्वर की उपस्थिति में न हो तो, तुम्हारे जीवन से कोई सुकर्म नहीं निकलता, केवल दुष्ट- केवल दुष्ट विचार, बुरे शब्द, बुरा व्यवहार, बुरे कार्य, विष और गंदगी ही तुम्हारे अन्दर से बहता है। लेकिन यदि तुम परमेश्वर में वास करते हो, तो तुम प्रेम में वास करते हो।

तुम कहाँ हो? क्या तुम कम से कम एसाव जैसी माफ़ कर देने वाली स्थिति में हो और ऐसे एक भाई से प्रेम करने में, जिसने तुम्हें ठोस पहुँचाई ? जब इसहाक की मृत्यु हुई, तो दोनों भाइयों एसाव और याकूब ने इकठ्ठे मिल कर अपने पिता को दफ़नाया था। क्या हम ऐसी पावन ,स्थिति में हैं जहाँ ऐसा मेल-मिलाप संभव हो?

हमें अपने को नम्र करना चाहिए और अपने हृदय की जाँच करनी चाहिए और इस बात का ध्यान रखें कि संजीवन में रुकावट न पैदा हो।

- जोशुआ दानियल।

Free On-Line
subscription
Would you like an On-Line subscription to the ***"मृत्युंजय खिस्त"?***
Please visit our web site at:
http://lefi.org

सत्य की परख!

' परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट के समय तत्पर सहायक।' भजन संहिता(४६:१)

पृष्ठ ३

स्तुतिगान करो।

(भजन १०७:२२)

यह स्तुति का भजन है। परमेश्वर का धन्यवाद करना, परमेश्वर को भेंट देने के समान है। अधिकतर हम परमेश्वर का धन्यवाद करना भूल जाते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर की और चैतन्य नहीं हैं।

हम अपने ही प्रयत्न पर निर्भर करते हैं और साथ ही प्रार्थना भी करते हैं। जब हम प्रार्थना के उत्तर में माँगी हुई चीज़ पाते हैं, तो अपने ही को शाबासी देते हैं। यह आस्था नहीं है।

आज 'धर्म' की परिभाषा, तो स्वयं-प्रयत्न अधिक और कार्य में परमेश्वर की सहायता कम । लोगों ने तो धर्म को भौतिक क्रियाकलापों में बदल दिया है, जैसे तीर्थयात्रा और सामाजिक कार्य। ऐसा व्यक्ति जो यह सब कार्य करता है, अंत में वे अपने को ही शाबासी देता है। लेकिन मसीह कार्य तो इसके विपरीत है। तुम केवल अपने प्रयास के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में प्रशंसा या विशेषता प्राप्त नहीं कर सकते। अपने ही प्रयासों द्वारा कई मसीह लोग उद्धार पाने का प्रयत्न करते हैं और परमेश्वर के सामने, अपने कार्यों द्वारा श्रेय प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। सत्य तो यह है कि परमेश्वर के वचन का पालन भी उसके अनुग्रह द्वारा ही संभव है। कोई भी व्यक्ति बिना परमेश्वर की सहायता के परमेश्वर के वचन का पालन वैसे नहीं कर सकता जैसा परमेश्वर चाहते हैं। परमेश्वर के मानदण्ड इतने ऊँचे हैं कि हम केवल अपनी सामर्थ से उसे प्रसन्न नहीं कर सकते।

हमारे अन्दर कोई ऐसी खूबी नहीं, जिसके द्वारा हम परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने के लायक बनें। मनुष्य एड़ी से चोटी तक पापी है। 'प्रभु मैं यह भेंट तेरे सम्मुख लाता हूँ,' मनुष्य कहता है। वह रुक कर यह नहीं जाँचता कि कैसे हाथों और कैसे मन के साथ वह अपनी भेंट ला रहा है। परमेश्वर यह ध्यान देते हैं कि वह लहू से सने हाथों और एक कपटी हृदय सहित आ रहा है। 'जैसे लिखा है, कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझता नहीं, कोई भी ऐसा नहीं जो परमेश्वर की खोज करता हो। वे सारे के सारे निकम्मे बन गए हैं। कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। उनका गला खुली क़ब्र है, वे अपनी जीभ से धोखा देते रहते हैं। उनके होठों में सर्पों का विष है, उनका मुख शाप और कड़वाहट से भरा हुआ है।' (रोमियों ३: १०-१४) हम ऐसे मनुष्य हैं।

संभवतः हम ऑपरेशन कक्ष में एक सुंदर गुलूबंद(दुपट्टा) लेकर आँए। लेकिन क्या डॉक्टर दवाई पट्टी बाँधने के लिए उसका उपयोग करेगा? डॉक्टर इस बात का बहुत ध्यान रखते हैं कि किसी ऐसी वस्तु का प्रयोग न करें जो जीवाणुहीन न हो। तुम चाहे यह कहो कि हमने इसे एक अच्छे साबुन से धोया है। लेकिन वह तुम्हें कहेगा कि तुम और तुम्हारा गुलूबंद इतना साफ़ नहीं है कि ऑपरेशन कक्ष में इसका प्रयोग किया जा सके। हम परमेश्वर के समक्ष कैसे हैं? हमारी श्रेष्ठ धार्मिकता गंदे चिथड़ों के समान है। यह हमारी श्रेष्ठ धार्मिकता का ' परमेश्वर द्वारा आकलन है। जब तक एक व्यक्ति यह न स्वीकार कर ले, वह परमेश्वर की दया नहीं पा सकता। उसे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उसके अच्छे से अच्छे चाल चलन के पीछे स्वार्थ छिपा है। उसे क्रूस के पैरों में धोए जाने की आवश्यकता है। तरसेस का शाउल नियमों के अनुसार निर्दोष था लेकिन उसे भी क्रूस के पैरों में धुलना पड़ा। वहाँ पर, उसने यह देखकर समझा कि कैसे उसके पाप और पापमय स्वभाव से धोने के लिए यीशु को यातना झेलनी पड़ी।

हमने संजीवन सभाएँ रखीं और प्रार्थना की, कि लोगों की आत्मिक आँखें खुलें। वहाँ एक ऐसा व्यक्ति था जो यह मानने को तैयार नहीं था कि वह पापी है। एक दिन, जब पश्चात्ताप की आत्मा लोगों के ऊपर आई तो यह व्यक्ति फूट-फूट कर रोने लगा। उसने यीशु को पुकारा, लेकिन वह दूसरे लोगों की ओर देख रहा था लेकिन इस व्यक्ति की ओर नहीं। यीशु अत्यधिक दयावान है, लेकिन जो पापी नहीं है उनके लिए उसके पास दया नहीं है।

क्रूस के चरणों में अपराध की क्षमा है। मनुष्य को परमेश्वर का अत्यधिक आभारी होना चाहिए कि कैसे यीशु ने हमें पापमय स्वभाव से छुड़ाने के लिए अपना बलिदान दिया। मुझे परमेश्वर का कितना आभारी होना चाहिए, उस महान छुटकारे के लिए कि कैसे उसने मेरे जवानी के दिनों में मुझे मेरे पापों से छुड़ाया यहाँ तक कि विचारों और कल्पनाओं में। क्या हम अपने दिन का आरंभ ऐसे दान के साथ करते हैं? कई मसीह लोग अपने दिन का आरंभ पवित्र भोज द्वारा करते हैं। लेकिन क्या उनके हृदय में सच्चा आभार है? जहाँ आभार से भरी स्तुति होती है, स्वर्ग नीचे उतर आता है।

- स्वर्गीय श्रीमान एन दानियल।

पृष्ठ ४

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।